वैश्य गौरव

महाराजा अग्रसेन

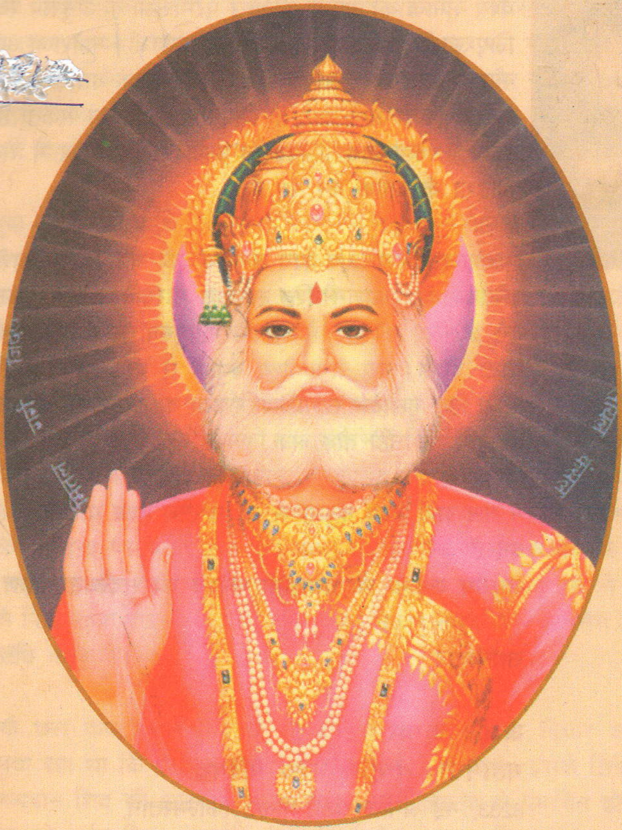

राष्ट्रीय वैश्य परिषद

अपनी बात

वैश्य समाज को अपनी उज्ज्वल परम्पराओं के अनुरूप स्थान दिलाने के लिए राष्ट्रीय वैश्य परिषद आज संघर्षरत है। महाराजा अग्रसेन अग्रवाल समाज के प्रवर्तक अवश्य थे। लेकिन उनके बताए हुए मार्ग को किसी वर्ग विशेष से आगे जाने के लिए रोका नहीं जा सकता है। यह भी एक सत्य है कि महाराजा अग्रसेन आज सम्पूर्ण विश्व में सेवा, समता एवं अहिंसा के प्रतीक बन गए हैं।

महाराजा अग्रसेन एवं वैश्य समुदाय की संक्षिप्त जानकारी देनेवाली इस पुस्तिका का प्रकाशन वैश्य समुदाय में विभिन्नता में एकता का परिचय देने के लिए की गई है। हमारे महापुरुषों ने हमें एक होकर रहने की शिक्षा दी है। मेरा सभी वैश्य बंधुओं से यही आग्रह है कि अपने सभी निजी हित भुलाकर सामाजिक एकता का एक ऐसा बांध खड़ा करें जिसे महावृष्टि भी नहीं तोड़ सके।

मैं उन सभी वैश्य बंधुओं से जो राष्ट्रीय वैश्य परिषद के सदस्य नहीं बने हैं
अनुरोध करूंगा कि यथाशीघ्र परिषद की सदस्यता ग्रहण करें।

सधन्यवाद,

अर्जुन कुमार
महामंत्री, राष्ट्रीय वैश्य परिषद
8233, नई अनाज मंडी, निकट फिल्मिस्तान,
दिल्ली–6
©3683331–5 फैक्स : 3521616

महाराजा अग्रसेन

समता के प्रणेता, अहिंसा के पुजारी, गणतंत्र के रक्षक–शांतिदूत महाराजा अग्रसेन का जन्म प्रताप नगर के राजा बल्लभ के यहां हुआ था। वह उनके बड़े पुत्र थे। महालक्ष्मी व्रत कथा के अनुसार वह समय द्वापर के अंतिम चरण और त्रेता का प्रथम का था और राजा धनपाल की छठी पीढ़ी में थे। अग्रसेन बचपन में ही अपनी दयालुता एवं समानता के लिए राज्य में चर्चित हो गए थे। उनके मन में किसी के प्रति कोई भेदभाव नहीं था उनके इस व्यवहार से प्रजाजन बहुत ही प्रसन्न थे।

अग्रसेन जब युवा अवस्था में पहुंचे उस समय नागराज महिधर ने अपनी कन्या के लिए स्वयंवर रचाया। भूलोक के अनेक राजाओं के साथ देवराज इन्द्र भी इस स्वयंवर में आये। नाग कन्या माधवी ने महाराजा अग्रसेन के गले में वरमाला डाल दी। यह विवाह दो संस्कृतियों का मिलन था। अग्रसेन सूर्यवंशी थे और महिधर नागवंशी।

देवराज इन्द्र माधवी की सुन्दरता पर मोहित था। माधवी के साथ विवाह रचाकर नागवंश को अपने साथ करना चाहता था, जिसमें उसको सफलता नहीं मिली। इससे इन्द्र के मन में अग्रसेन के प्रति द्वेष उत्पन्न हो गया। ईर्ष्या की भावना के कारण इन्द्र ने प्रतापनगर में वर्षा बंद करवा दी। फलस्वरूप प्रतापनगर में भयंकर अकाल पड़ गया, चारों ओर त्राहि–त्राहि मच गई। इस पर महाराजा अग्रसेन ने इन्द्र पर चढ़ाई कर दी। महाराजा अग्रसेन के नैतिक बल के सामने इन्द्र की सेना टिक नहीं पाई और वह घबरा कर युद्ध से भाग गया। तत्पश्चात् इन्द्र ने देवर्षि नारद को अग्रसेन के पिता राजा बल्लभ के पास संधि करने भेजा। नारदजी ने अग्रसेन और देवराज इन्द्र के बीच संधि करवायी।

देवराज इन्द्र के छल कपट वाले व्यवहार से अग्रसेन के मन में यह विचार सबसे अधिक उथल–पुथल मचा रहा था कि इन्द्र से हमेशा के लिए कैसे बचा जाये। इसके लिए अग्रसेन ने काशी जाकर भगवान शिव की आराधना प्रारंभ की। कठिन तपस्या से प्रभावित होकर भगवान शंकर ने अग्रसेन को दर्शन दिए। भगवान शंकर ने अग्रसेन से कहा कि प्रतापनगर की समस्या वैभव एवं सम्पन्नता की रक्षा करने की है। वैभव की देवी महालक्ष्मी ही है अतः महालक्ष्मी को प्रसन्न करने का उपाय सुझाया।

भगवान शंकर के आदेशानुसार अग्रसेन ने महालक्ष्मी की आराधना प्रारंभ की। महालक्ष्मी तपस्या से प्रभावित होकर अग्रसेन को महाप्रतापी होने का आशीर्वाद दिया। साथ ही महालक्ष्मी ने यह भी कहा कि वह क्षत्रिय वर्ण त्यागकर वैश्य वर्ण अपनायें। महालक्ष्मी ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा कि वह जब तक अग्रसेन के वंशज अहिंसा एवं सेवा का धर्म पालते रहेंगे तब तक हमेशा उनके वंशजों के साथ रहेगी। महालक्ष्मी ने अग्रसेन को यह भी कहा कि वे अपना अलग राज्य स्थापित करें। महालक्ष्मी के आशीर्वाद का कवच पहनकर अग्रसेन ने प्रतापनगर को एक सुव्यवस्थित राज्य के रूप में विकसित किया। अग्रसेन की शक्ति और कूटनीति की चर्चा चारों ओर फैल गई थी। राजा वल्लभ ने अग्रसेन को प्रतापनगर का राज्य सौंपने का निश्चय किया। अग्रसेन को जब इस निर्णय की जानकारी मिली तो उनके मन में महालक्ष्मी के द्वारा नया राज्य बसाने का प्रश्न बार–बार उठने लगा।

अग्रसेन ने राजा वल्लभ से महालक्ष्मी के आशीर्वाद की चर्चा की और कहा कि वह प्रतापनगर का राज्यभार लेकर महालक्ष्मी के आदेश की अवहेलना नहीं करेंगे। महालक्ष्मी के आशीर्वाद को पूरा करने के लिए अग्रसेन ने पुनः वन में जाकर तपस्या प्रारंभ की। तपस्या से प्रसन्न होकर महालक्ष्मी ने दर्शन दिए और कहा कि कोल्हापुर जाकर नागराज कुमुद की कन्या सुन्दरावती के स्वयंवर में भाग लें और सफलता प्राप्त करें। अग्रसेन ने एक पत्नी के रहते हुए दूसरे विवाह पर आश्चर्य व्यक्त किया। किंतु महालक्ष्मी ने कहा कि नागराज कुमुद की कन्या का वरण करने के पश्चात अग्रसेन और शक्तिशाली हो जायेंगे तथा इन्द्र उनकी ओर आंख भी नहीं उठा पायेगा। महालक्ष्मी के आशीर्वाद से अग्रसेन सुन्दरावती को वरण करने में सफल हुए।

सुन्दरावती को वरण कर प्रतापनगर की ओर लौटते समय एक स्थान पर उन्होंने देखा कि एक शेर के बच्चे से भेड़िया का बच्चा जूझ रहा है। सुन्दरावती और अग्रसेन ने सोचा कि यह भूमि वीर प्रसूता है। उन्होंने वहीं पर अपना नया राज्य बनाने का निश्चय किया। वहां पर बसाये नए नगर का नाम ही अग्रोदक (आज का अग्रोहा) रखा गया। यहीं से अग्रसेन महाराजा अग्रसेन बन गए। अग्रोदक के सुनियोजित विकास से अग्रोदक की तरफ लोगों का आकर्षण बढ़ा और देखते ही देखते यह राज्य का सबसे समृद्धशाली नगर बन गया। असापास के क्षेत्रों पर महाराजा अग्रसेन ने अपना प्रभाव जमाया। व्यापार, कृषि और उद्योग के विकास से महाराजा अग्रसेन की कीर्ति चारों ओर फैलने लगी।

महाराजा अग्रसेन ने अनेक यज्ञ आयोजित किए। उस युग में यज्ञ करना और उसमें सफलता प्राप्त करना, सम्पन्नता का प्रतीक माना जाता था। 18वें यज्ञ के समय महाराजा अग्रसेन ने देखा कि बलि के लिए जा रहे घोड़े बलि स्थान की ओर बढ़ने की बजाय पीछे हटना चाह रहे थे। महाराजा अग्रसेन के मन में घोड़ों के प्रति करूणा के भाव पैदा हुए और सोचा कि इन मूक पशुओं की बलि से क्या मेरा कल्याण हो सकता है। इस भावना से उनके मन में अहिंसा का एक तूफान उठा और उन्होंने अपने मंत्रिमंडल से इस बारे में विचार–विमर्श किया। अधिकतर लोगों का मानना था कि हिंसा बंद कराने से पड़ोसी राज्यों पर असर पड़ेगा और वे कहीं अग्रोहा पर हमला नहीं कर बैठें। इस पर महाराजा अग्रसेन ने कहा कि बलि शक्ति का प्रतीक नहीं है, हम समाज में व्याप्त विषमता को दूर करने के लिए आवश्यक कदम उठायेंगे। हिंसा बंद करवाने का यह अर्थ नहीं कि हम अपने राज्य की भी रक्षा नहीं कर सकेंगे। उस यज्ञ में उन्होंने पशु बलि नहीं दी गई और अपने राज्य में हिंसा रोकने का आदेश दिया। साथ ही यह व्यवस्था भी की गई कि अग्रोहा में साधनहीन या नए आनेवाले प्रत्येक परिवार को अग्रोहावासियों द्वारा एक रुपया और एक ईंट भेंट स्वरूप दी जायेगी। महाराजा अग्रसेन ने अग्रोहा राज्य को 18 जनपदों में विभाजित कर अपने पुत्रों को एक–एक जनपद का अधिशाषी बनाया। यज्ञों में 18 राजकुमारों के साथ बैठे गुरूओं के नाम पर गोत्रों की स्थापना की। यही गोत्र आज अग्रवंश को गीता के 18 अध्याय की भांति अलग–अलग होकर भी एक–दूसरे से जोड़े हुए हैं। इस व्यवस्था से अग्रोहा का चहुंमुखी विकास हुआ। अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में महाराजा अग्रसेन ने बड़े पुत्र विभु को राजगद्दी सौंप कर स्वयं वानप्रस्थ को चले गए।

महाराजा विभु और उनकी अनेक पीढ़ियों ने अग्रोहा गणराज्य को शांतिपूर्वक एवं कुशल शासक के रूप में चलाया। किंतु अग्रोहा के विकास से आसपास के राज्यों में बहुत ही ईर्ष्या उत्पन्न हुई और उन्होंने अग्रोहा पर अनेक हमले किए। इन हमलों से अग्रोहा को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ा। बार–बार होनेवाले युद्धों से अग्रोहा की शक्ति क्षीण हुई। एक षड़यंत्र के तहत पूरे अग्रोहा नगर को भयंकर आग का सामना करना पड़ा। जिसके कारण अग्रोहावासी विभिन्न क्षेत्रों में फैल गए और अपने जनपदों, गुरुओं के नाम पर आज भी 18 गोत्रों में विभाजित होकर महाराजा अग्रसेन के नाम की कीर्ति फैला रहे हैं। महाराजा अग्रसेन की शिक्षा के अनुसार आज भी अग्रवाल समाज जनसेवा के कार्यों में अग्रणी हैं।

भारत सरकार एवं महाराजा अग्रसेन : महाराजा अग्रसेन की स्मृति में भारत सरकार ने 24 सितम्बर 1976 को एक डाक टिकट जारी किया था। अग्रोहा के महत्व को देखते हुए भारत सरकार ने दिल्ली से फाजिल्का तक जानेवाले राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 10 का नाम भी महाराजा अग्रसेन राष्ट्रीय राजमार्ग किया है। इसी तरह एक लाख दस हजार टन की क्षमता वाले मालवाहक जहाज का नाम भी महाराजा अग्रसेन जलयान रखा है। दिल्ली से त्रिवेन्द्रम तक प्रस्तावित एक्सप्रैस हाईवे का नामकरण भी महाराजा अग्रसेन के नाम पर करने की भारत सरकार ने घोषणा की है।

महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, हरियाणा एवं राजस्थान के पाठ्यक्रमों में महाराजा अग्रसेन का पाठ पढ़ाया जाता है।

अग्रोहा

हरियाणा के हिसार नगर से 20 किमी. दूर उत्तर–पश्चिम में वर्तमान अग्रोहा ग्राम प्राचीन अग्रोदक नगर के खण्डहरों से एक किमी. दूर बसा है। अग्रोहा के खण्डहरों की खुदाई सन् 1888–89 में हुई, तभी अग्रोहा के प्राचीन वैभव की जानकारी लोगों को हुई।

प्राचीन थेह : इसके नीचे प्राचीन नगर अग्रोदक के अवशेष छिपे हुए हैं। वर्षा के कारण अनेक जगह दरारें पड़ गई है।। कुछ स्थानों पर भारत सरकार ने 1939 में खुदाई करवाई थी। खुदाई से प्राप्त अनेक वस्तुएं एव सिक्के लाहौर स्थित संग्रहालय में रखे हुए हैं। अग्रोहा विकास ट्रस्ट द्वारा भारत सरकार से आग्रह किए जाने पर 1980 के आस–पास पुनः खुदाई की गई थी किंतु वर्षा के कारण बिना किसी परिणाम पर पहुंचे अफसरशाही ने खुदाई के कार्य को बंद कर दिया। इस टीले के आस–पास प्राचीन सिक्के, मूर्तियां, ईंटें, बरतन आदि प्राप्त होते रहते हैं।

अग्रोहा में खुदाई में प्राप्त सिक्के।

विकास के प्रारंभिक प्रयत्न : भिवानी के सेठ भोलाराम डालमिया तथा लाला सांवलराम ने सन् 1914 में एक गोशाला व सन् 1939 में श्री रामजीदास बाजोरिया कलकत्ता वालों ने श्री अग्रसेन का मंदिर एवं धर्मशाला बनवाए। डालमिया ट्रस्ट ने एक कुआं और प्याऊ बनवाए।

अप्रैल 1975 में दिल्ली में अखिल भारतीय अग्रवाल प्रतिनिधि सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन में अग्रोहा का विकास करने का निश्चय किया गया। सन् 1976 में पदम्श्री देवी सहाय जिंदल की अध्यक्षता व श्री रामेश्वरदास गुप्ता के मंत्रीत्व में अग्रोहा विकास ट्रस्ट का गठन हुआ।

अग्रोहा विकास ट्रस्ट की प्रगति : अग्रसेन इंजीनियरिंग एण्ड टेक्निकल कालेज सोसायटी ने 23 एकड़ भूमि सन् 1976 में अग्रोहा विकास ट्रस्ट को दी। सम्मेलन के संस्थापक अध्यक्ष श्रीयुत् श्रीकिशन मोदी के प्रारंभिक सहयोग से मंदिर निर्माण का कार्य प्रारंभ हुआ। इस निर्माण कार्य को आगे बढ़ाने में स्व. तिलकराज अग्रवाल, मुम्बई, श्री बनारसीदास गुप्ता, श्री चाननमल बंसल,

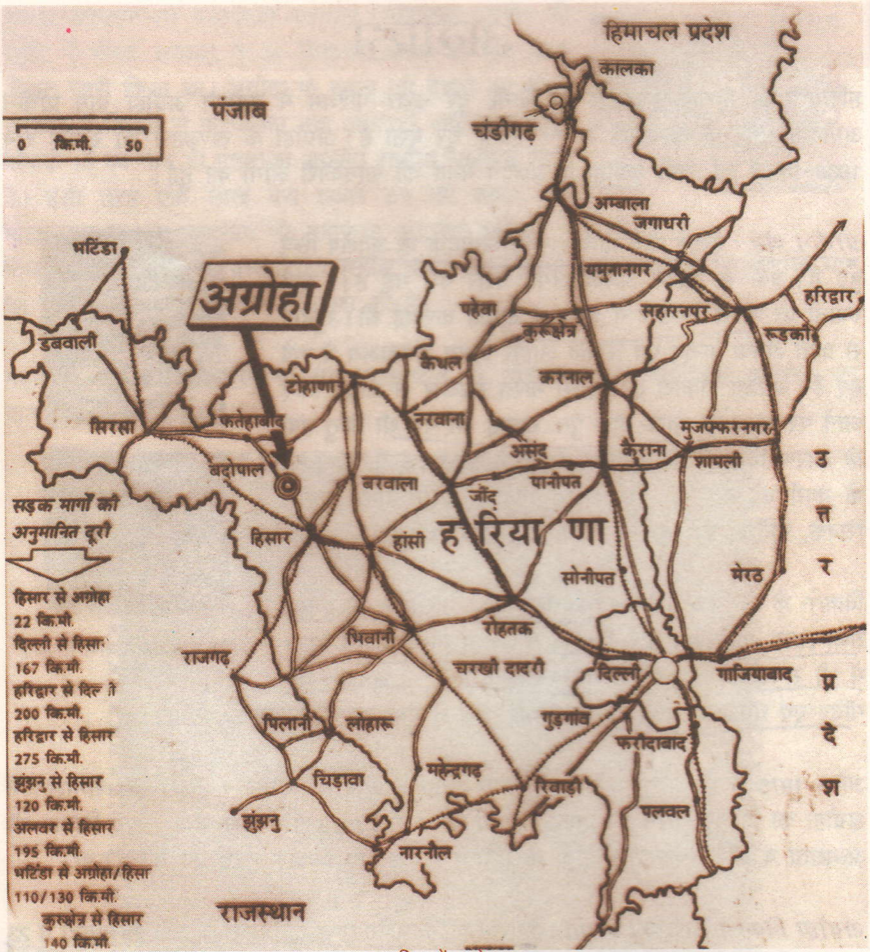

मानचित्र में अग्रोहा

श्री ओमप्रकाश जिंदल, श्री बालकृष्ण गोयनका, मद्रास एवं श्री कालीचरण केसान, कलकत्ता का विशेष योगदान भी उल्लेखनीय है। किंतु अग्रोहा को विशाल स्वरूप देने के लिए श्री सुभाष गोयल एवं उनके पिता श्री नंदकिशोर गोयनका की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम होगी।

अग्रोहा विकास ट्रस्ट द्वारा निर्मित दर्शनीय स्थल

- महाराजा अग्रसेन मंदिर।
- कुलदेवी महालक्ष्मी मंदिर।
- वीणावादिनी सरस्वती का मंदिर।
- शक्ति सरोवर।
- अग्रसेन को लक्ष्मी जी का वरदान आदि की झांकियां।
- हनुमान मंदिर एवं 90 फीट ऊंची भगवान मारुति की प्रतिमा।
- मारुति चरण पादुका मंदिर।
- वैष्णो देवी गुफा मंदिर।
- बाबा भैरव मंदिर।
- अमरनाथ की बर्फानी गुफा।
- श्री अग्रेश्वर महादेव मंदिर।
- तिरुपति बालाजी मंदिर।
- जलधारा से युक्त भोलानाथ की प्रतिमा।
- भगवान रामचन्द्र एवं भगवान श्रीकृष्ण के जीवन पर आधारित स्वचालित झांकियां।
- महाराजा अग्रसेन शोध केन्द्र।
- डायनासोर।
- बृजवासी अतिथि सदन।
- बाल क्रीडा केन्द, अप्पू घर।
- नौका विहार।
- रज्जू मार्ग।

शीलामाता शक्ति मंदिर

अग्रोहा विकास संस्थान : महान समाजसेवी स्व. श्री तिलकराज अग्रवाल, मुम्बई द्वारा अग्रोहा विकास संस्थान की स्थापना की गई। शीलामाता की प्राचीन मढ़ी का जीर्णोद्वार कर भव्य बनाने की योजना इस संस्थान ने बनाई। स्व. तिलकराजजी के उत्साह एवं कठोर परिश्रम के बावजूद उनके जीवन काल में यह मंदिर नहीं बन पाया। किंतु उनके पुत्र श्री शीतल अग्रवाल, श्री विनोद अग्रवाल एवं दामाद श्री धीरज किशोर अग्रवाल के परिश्रम से सन् 1991 में यह मंदिर बनकर

तैयार हुआ। यहां पर जानकी सदन के नाम से एक अतिथि गृह भी बनाया गया है। यहां पर प्रतिवर्ष भादों की अमावस्या के दिन यज्ञ, प्रवचन एवं भण्डारे का आयोजन होता है। देश-विदेश से अग्रबंधु बच्चों का मुण्डन संस्कार कराने यहां ही आते हैं।

महाराजा अग्रसेन मेडिकल कालेज एवं अस्पताल, अग्रोहा

अग्रोहा अब केवल अग्रवालों का ही तीर्थ स्थान नहीं रहा। सम्पूर्ण मानव जाति को शारीरिक रोगों से मुक्ति दिलानेवाला आरोग्यधाम भी बन गया है। अग्रोहा में एक हजार शैय्या वाला अस्पताल एवं महाराजा अग्रसेन मेडिकल कालेज बन रहा हैं इस कालेज एवं होस्पीटल के निर्माण में अब तक 30 करोड रुपए व्यय हुए, इसमें आधी राशि हरियाणा सरकार ने और आधी राशि अग्रवालों ने दी है। संचालन का 99 प्रतिशत व्यय हरियाणा सरकार वहन करेगी। इस कालेज में केंसर, मधुमेह, हृदयरोग, एड्स आदि विभिन्न रोगों पर शोध भी किया जायेगा। इस कालेज एवं अस्पताल के लिए अप्रैल 1988 में महाराजा अग्रसेन मेडिकल एजुकेशन एण्ड साईंटिफिक सोसायटी बनी। मई में हरियाणा सरकार ने 267 एकड़ भूमि को अधिग्रहण कर एक रुपया प्रतिवर्ष के नाम मात्र किराए पर सोसायटी को दे दी। देहाती क्षेत्र में भारत का पहला बड़ा अस्पताल होने का गौरव भी इसे प्राप्त है। कालेज एवं अस्पताल का उद्घाटन 7 अगस्त, 1994 को हुआ। वर्तमान में श्री ओमप्रकाश जिंदल, विधायक, हिसार अध्यक्ष, श्रीमती अरूणा ओसवाल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, श्री नंदकिशोर गर्ग, विधायक, दिल्ली महामंत्री एवं श्री रोशनलाल अग्रवाल इसके कोषाध्यक्ष हैं। वर्तमान में यहां पर 50 छात्र एमबीबीएस में एवं 30 छात्राएं नर्सिं में अध्ययन कर रही हैं एवं 300 बिस्तरों का इण्डोर विभाग चल रहा है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मात्र 25 रुपये प्रतिदिन में (डॉक्टरों का व्यय, नाश्ता-भोजन, दवा सहित) इतना सस्ता उपचार कहीं नहीं मिलता है।

वैश्य समाज के घटक

देश भर में 300 से अधिक जातियां हैं, जो वैश्य समाज के रूप में जानी-जाती हैं। सभी वर्गों का उल्लेख यहां सम्भव नहीं है। दक्षिण भारत में वैश्य के रूप में प्रसिद्ध नाम्बियार एवं चेट्टियार उल्लेखनीय हैं। पूर्वी भारत में सेन उपवर्ग से सम्बोधित होनेवाला समाज वैश्य है। गुजरात में मेहता एवं शाह प्रमुख वैश्य घटक हैं। देश भर में सर्वाधिक रूप से फैले समुदाय में अग्रवाल समाज की गणना प्रमुखता से की जाती है।

सामाजिक क्षेत्र में वैश्य-समाज

भारतीय जन–जीवन में वैश्य समुदाय का जनहितकारी योगदान देश के अन्य समुदायों से सर्वाधिक है। हजारों–हजार स्कूल–कॉलेज, धर्मशालाएं, मंदिर, गौ–शालाएं, हजारों पक्षी–निलय (छतरिया), अनाथालय, तालाब, कुएं और सड़कें तथा औषधालय का निर्माण वैश्य–अग्रवाल समाज ने ही कराया है। ये सभी वैश्य जाति के मानव तथा पशु–पक्षियों के हित में निर्मित ये कल्याणकारी योजनाओं की परंपरा अनादि काल से चली आ रही है।

वैश्य जाति के प्रत्येक व्यक्ति को अपने पूर्वजों और समकालीन बंधुओं द्वारा किए गए इन कार्यों पर गर्व होना स्वभाविक है। इतना ही नहीं, भारत के स्वाधीनता आंदोलन और राष्ट्र–निर्माण में भी वैश्य जाति का विशिष्ट योगदान रहा है।

राष्ट्रीय वैश्य परिषद

देश के ही नहीं अपितु दुनिया के सभी वैश्य बंधुओं को एक जुट करने के लिए राष्ट्रीय वैश्य परिषद (पंजी.) विशेष कार्य कर रही है।

बिहार से राज्यसभा के सदस्य श्री प्रेम गुप्ता परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं और श्री जय भगवान गुप्ता उपाध्यक्ष हैं। महामंत्री का उत्तरदायित्व श्री अर्जुन कुमार के कंधों पर है।

उत्तर प्रदेश से राज्यसभा सदस्य श्री अखिलेश दास, चंडीगढ़ से लोकसभा सदस्य श्री पवन बंसल, हरियाणा के विधायक श्री मांगेराम गुप्ता आदि अनेकों समाज प्रमुख राष्ट्रीय वैश्य परिषद से जुड़े हुए हैं। परिषद की युवा शाखा के अध्यक्ष के रूप में श्री अशोक बुवानीवाला एवं महिला शाखा अध्यक्ष के रूप में श्रीमती रेखा गुप्ता अपना उत्तरदायित्व बखूबी निभा रहे हैं।

अग्रवाल

यदि हम अग्रवाल जाति के इतिहास का मनन करें तो यह ज्ञात होगा कि समय–समय पर इस समाज की विभूतियों ने भारत के राजतंत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। महाराजा अग्रसेन,

गुप्ता तथा वर्धन सम्राट ने भारतीय गणतंत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर देश को स्वर्णयुग प्रदान किया। आज जिस लोकतंत्र की बात हम करते हैं वह आज से 5000 वर्ष पूर्व अग्रोहा के गणराज्य रूप में जीवित था और इसके संस्थापक थे महाराजा अग्रसेन। वही 18 गण आज गोत्र के रूप में प्रचलित हैं।

मुस्लिम काल में हेमचंद, टोडरमल, ननूमल, राजा रतनचंद ने अपनी शासकीय प्रतिभा का परिचय दिया था। बहादुरशाह जफर को आजादी की लड़ाई में 2 करोड़ से भी अधिक का योगदान देनेवाले रामजीदास गुड़वाले को ब्रिटिश हुकुमत ने चांदनी चौक में सरे आम फांसी पर लटका दिया था।

महात्मा गांधी और कस्तूरबा

भारतेन्दु हरिशचन्द्र

जमनालाल बजाज

लाला लाजपतराय

एक सदी पूर्व के आधुनिक हिन्दी के प्रणेता भारतेन्दु हरिशचन्द्र को भी भुलाया नहीं जा सकता।

शिवप्रसाद गुप्त

ब्रिटिश शासन के विरूद्ध आजादी की लड़ाई लड़ने में पंजाब केसरी लाला लाजपत राय, महात्मा गांधी, डॉ. राममनोहर लोहिया, भारत रत्न डॉ. भगवानदास, जमनालाल बजाज, राजा शिवप्रसाद, पश्चिम बंगाल के गांधी सीताराम सेकसरिया जैसे अनेक अग्रवाल देश–भक्तों ने भारतीय स्वतंत्रता के आंदोलन में अपना सर्वस्व न्यौच्छावर कर दिया था।

स्वतंत्र भारत में श्रीयुत् श्रीमन्नारायण, डॉ. राममनोहर लोहिया, सेठ पिताम्बर दास, बाबू बनारसीदास गुप्ता, उत्तर प्रदेश, श्री मोहनलाल सुखाड़िया, राजस्थान, श्री बनारसीदास गुप्ता, हरियाणा आदि ऐसे अनेकों नाम हैं जिन्होंने राजनीतिक क्षेत्र में विशेष योगदान दिया। विज्ञान के क्षेत्र में डॉ. आत्माराम एवं रामनारायण अग्रवाल, साहित्य के क्षेत्र में डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल,

डॉ राममनोहर लोहिया

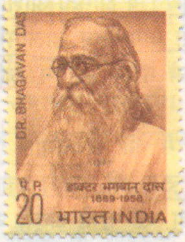

डॉ भगवानदास

हनुमान प्रसाद पोद्दार

बाबू गुलाबराय, समाजसेवा के क्षेत्र में सर गंगाराम, भागीरथ कानोडिया आदि अनेक महापुरुषों ने विशेष योगदान दिया है। असमिया साहित्य एवं संस्कृति के विकास के लिए ज्योतिप्रसाद अग्रवाल के योगदान के लिए सम्पूर्ण पूर्वोत्तर भारत उनका आभार प्रकट करते हुए उन्हें रूपकंवर की उपाधि से विभूषित किया है।

राजा शिवप्रसाद गुप्त द्वारा
स्थापित काशी विद्यापीठ

श्री प्रकाश

सर गंगाराम

पत्रकारिता के क्षेत्र में श्री बालमुकुंद गुप्त, हरियाणा श्री मूलचंद अग्रवाल, कलकत्ता, श्री बालेश्वर अग्रवाल, दिल्ली, कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी, अजमेर, श्री पूरणचंद गुप्त एवं श्री नरेन्द्र मोहन गुप्त, कानपुर, श्री डोरीलाल अग्रवाल, आगरा, श्री रामनाथ गोयनका, चैन्नई, श्री हरिकिशन अग्रवाल, नागपुर आदि के योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता है।

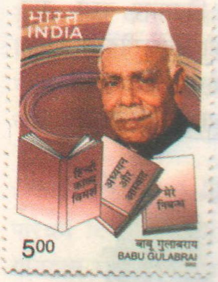

बाबू गुलाबराय

अग्रवाल समाज में ऐसे अनेक महानुभाव हुए हैं, जिन्होंने भारत का नाम दुनिया में रोशन किया है। इनमें अंतर्राष्ट्रीय चैम्बर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष के रूप में डॉ. भरत राम एवं श्री हरिशंकर सिंघानिया, स्नूकर में विश्व चैम्पियन श्री सुभाष अग्रवाल, क्रिकेट में श्रीमती संध्या अग्रवाल, मैराथन में श्रीमती आशा अग्रवाल, अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद के रूप में श्री जगमोहन डालमिया, अंतर्राष्ट्रीय फिलाटेली कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में श्री डी.एन. जटिया के नाम उल्लेखनीय हैं।

धार्मिक क्षेत्र में श्री जयदयाल गोयनका, श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार, प्रसिद्ध जैन संत श्री दर्शन लाल जी महाराज, बौद्ध आचार्य श्री सत्यनारायण गोयनका के नाम के बिना यह सूची अधूरी रहेगी।

अग्रवालों के गोत्र

गर्ग	मंगल	कुच्छल गोयन/गंगल	गोयल	बंसल
कंसल	सिंहल	जिंदल तिंगल	ऐरण	धारण
मधुकुल	बिंदल	मित्तल तायल	भंदन	नागल

युवा अग्रवाल समाचार पत्र

आज देश में अग्रवाल समाज का एकमात्र प्रतिनिधि साप्ताहिक समाचार पत्र हैं। पत्र का प्रकाशन 1981 में प्रारंभ हुआ था। पिछले तीन वर्षों से इसका प्रकाशन नियमित रूप से हो रहा है। प्रारंभ से ही इसका सम्पादन श्री ओमप्रकाश अग्रवाल कर रहे हैं। वर्तमान में इसकी प्रसार संख्या सात हजार है। देश के प्रत्येक राज्य में युवा अग्रवाल पहुंच रहा है।

माहेश्वरी

घनश्यामदास बिड़ला

वैश्य समाज का यह घटक अपने को भगवान शिव (महेश) का पुत्र मानता है। इस घटक के लोग मूलतः राजस्थान के निवासी हैं लेकिन सारे देश में फैले हुए हैं। भारतीय औद्योगिक क्रांति के अग्रदूत पद्म विभूषण श्री घनश्याम दास बिड़ला, बरार केसरी श्री बृजलाल ब्याणी जैसे अनेकों महापुरुष इस समाज ने दिए हैं। इसके साथ ही सोमानी, बांगड़, धूत आदि औद्योगिक परिवार भी माहेश्वरी समाज से ही है।

बृजलाल बियाणी

प्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी श्री कृष्णलाल जाजू, ब्यावर के राठी जी आदि पर भी माहेश्वरी समाज को गर्व है। कहते हैं कि मारवाड़ी स्त्रियां परदे में ही रहती है। लेकिन बिड़ला परिवार की श्रीमती शेभना भरतीया ने हिन्दुस्तान टाइम्स जैसे विशाल उद्योग की कमान संभालकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है।

विजयवर्गीय

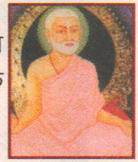

वैश्य के एक अंग के रूप में प्रसिद्ध विजयवर्गीय समाज ने भी अनेकों महानुभाव इस देश को दिए हैं। अंतर्राष्ट्रीय रामस्नेही सम्प्रदाय, शाहपुरा के संस्थापक स्वामी श्री रामचरण जी महाराज पर विजयवर्गीय समाज गौरवान्वित है।

खण्डेलवाल

संत सुदरदास

राजस्थान के सीकर जिले के खण्डेला कस्बे से निकले वैश्य समुदाय को खण्डेलवाल के रूप में जाना जाता है। इस समाज ने भी अनेकों महापुरुष दिए हैं। इन महापुरुषों में दादू परम्परा से जुड़े संत सुंदरदास जी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

ओसवाल

जैन समाज के रूप में जानाजाने वाला यह वैश्य घटक राजस्थान की ओसिया नगर से निकला है। ओसवाल समाज अधिकतर श्वेताम्बर जैन समाज से जुड़ा हुआ है। इसमें श्री अभय ओसवाल एक प्रमुख समाजसेवी एवं उद्यमी के रूप में जाने जाते हैं। अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसीजी भी इसी समाज से हुए हैं।

आचार्य तुलसीदास

इसी तरह महावर, माहौर, रूस्तगी, रोहतगी, दूसर, वरणवाल, माथुरवैश्य, कसोधन, मोढ़, गोहोई आदि अनेकों घटक हैं जिनके महानुभावों ने न केवल अपने समाज का नाम अपितु देश के नाम पर भी चार चांद लगाए हैं।

मैथिलीशरण गुप्त

भामाशाह

श्यामलाल गुप्त

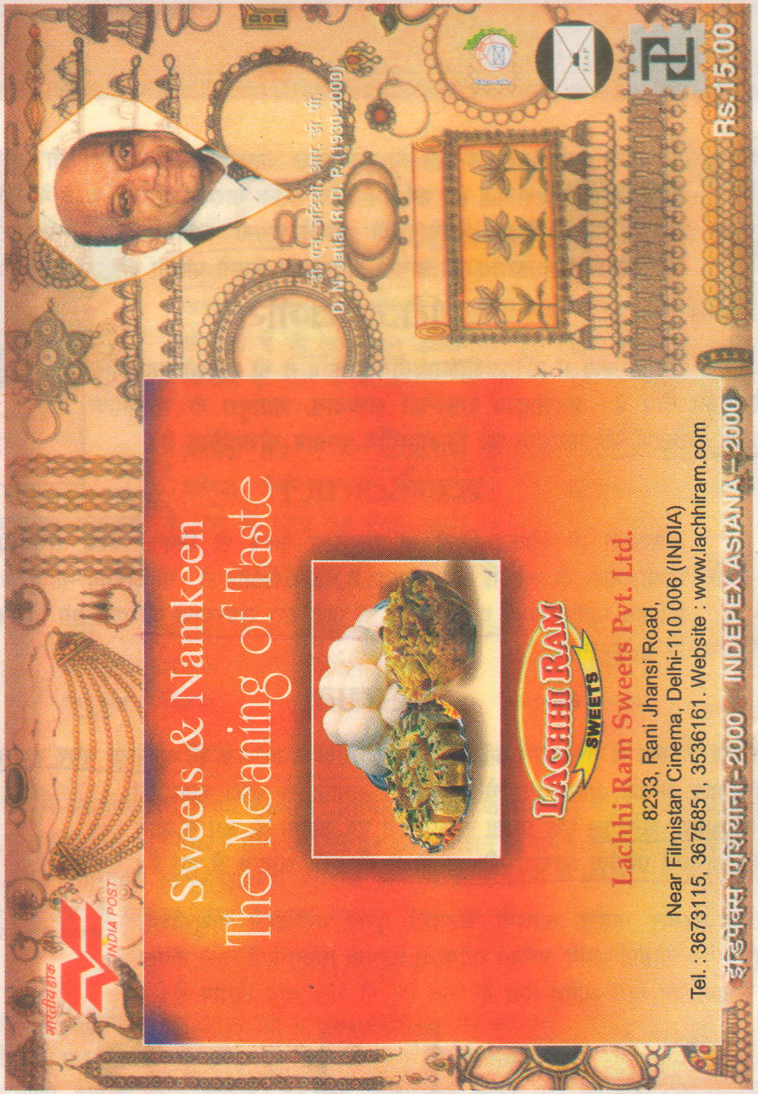

इंटरनेशनल फिलाटेली कांग्रेस के अध्यक्ष श्री डी.एन. जटिया की स्मृति में भारत सरकार द्वारा जारी डाक टिकट आप नीचे के चित्र में देख सकते हैं। बीच में जो स्थान डाक टिकट में छोड़ा गया है उसका हमने अपने विज्ञापन दाता के लिए उपयोग किया है।